डा॰ किरण उरांव
एसोसिएट प्रो॰
R.M.C. सासाराम

B.A Part II Hons
सत्र- 2019-20
विषय- Psy paper III and group A

शोध प्रक्रिया मे निहित अवस्थायें या चरणें

Stages or step in research process

शोध का लक्ष्य नये विज्ञान की खोज करना तथा पुराने ज्ञान की जाँच करना है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए शोध कर्ता को अनेक अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। जहाँ तक मनोवैज्ञानिक शोध का प्रश्न है, इसमे निम्नलिखित अवस्थायें हैं-

1. **शोध समस्या (research problem)** :- किसी भी शोध की पहली अवस्था समस्या है बिना शोध कार्य प्रारम्भ हो ही नही सकता है। यह बात मनोवैज्ञानिक शोध अथवा सामाजिक शोध पर भी लागू होती है। शोध समस्या की कुछ मुख्य विशेषताएं होती है जिनके आलोक मे शोधकर्ता किसी समस्या का चयन करता है जैसे कैंसर क्यो होता है? यह एक शोध समस्या है जिसका कोई उत्तर अभी तक उपलब्ध नही हो सका है।
 इस अवस्था मे शोधकर्ता कई स्रोतो की सहायता से अपनी रुचि के अनुसार किसी समस्या का चयन कर लेता है। विशेष रूप से पुस्तक, पत्रिकायें, शोध-सार, विश्वज्ञान-कोश आदि की सहायता से शोध समस्या को ढूँढ निकालता है।

2. **परिचय (Introduction)** :- शोध की यह दूसरी अवस्था है। इस अवस्था मे शोधकर्ता अपनी दूसरी शोध समस्या का परिचय देता है। जैसे मान ले कि शोधकर्ता के सामने समस्या यह है कि रूढ़िवादी पर संज्ञानात्मक कारको तथा असंज्ञानात्मक कारको का प्रभाव पड़ता है। इनके बीच संबंधो का उल्लेख होगा। रूढ़िवाद किसे कहते है इसके लक्षण कौन-2 है वह उदारवादी व्यक्ति किस प्रकार भिन्न है इन सारी बातों उल्लेख किया जायेगा।

3. **साहित्य समीक्षा (Literature review)** :- इस अवस्था मे शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा की जाती है। जो शोध समस्या से प्रत्यक्ष रूप से अथवा अप्रत्यक्ष रूप से संबंधित होते है। समस्या से संगत अध्ययनो की समीक्षा से कई तरह का लाभ होते होते हैं शोध समस्या के संबंध मे शोधकर्ता को इस बात की जानकरी मिलती है कि यह शोध कहाँ तक सार्थक है।

Scanned with CamScanner